P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक पर्यटन : कुछ दृष्टियाँ और अवलोकन

आर. एस. त्रिपाठी
प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
बड़वारा, कटनी, म0प्र0

श्रीमती पूर्णिमा मिश्रा
शोधछात्रा,
वाणिज्य संकाय,
रानी दुर्गावती विशविद्यालय,
जबलपुर

सारांश

पूरी दुनिया के समाजशास्त्री पर्यटन को एक सामाजिक परिघटना मान रहे है जो 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध से धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन और देशज समुदायों के पर्यटन स्थानों के बढ़ती लोकप्रियता का मुख्य क्षेत्र है। इस परिधि में पर्यटक का दृष्टिकोण और व्यवहार इंटरटेनमेंट इण्डस्ट्री का पक्ष मजबूत है। जनजातीय क्षेत्र में धार्मिक स्थलों में विभाजन सामान्य हिन्दु धार्मिक स्थल से अलग आदिवासी स्थल हैं। यहॉ की पवित्रता, प्राचीनता, गंतव्य स्थल की छवि के साथ यात्रा–संस्कृति का प्रभाव सम्मिलित है। जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन का दायरा और प्रभाव दोनों बढ़ा है। भारत में पर्यटकों को बस्तर की मड़ई और स्थानीय मेला आकर्षित किये हुये है। आदिवासी क्षेत्रों में स्थान की पवित्रता, ऐतिहासिकता, और देशी जनजाति राजाओं का इतिहास धार्मिक स्थलों की स्थापत्य कला लोकप्रियता है। सांस्कृतिक पर्यटन आकर्षण और विकर्षण प्रभावों से है। जनजातीय वस्त्र, हस्तशिल्प, जड़ी बूटियों का स्थान पर्यटकों से सम्बंधित विपणन और बाजार स्थितियों का बड़ा क्षेत्र है इकोटूरिज्म की पर्यटन व्यवसाय में लोकप्रियता है व पर्यटन के क्षेत्र में अभ्यारण्य (टाइगर रिजर्व) में आदिवासियों का विस्थापन और बाहरी बसावट तथा पुर्नबसावट के मुद्दे है जिससे पर्यटकों के भ्रमण में रोक लगाई जाती है। हमें आदिवासी संस्कृति पर पर्यटन के प्रभावों का अध्ययन करना चाहिये।

मुख्य शब्द : पर्यटन का समाजशास्त्र, सांस्कृतिक पर्यटन, आदिवासी विस्थापन, अभ्यारण्य, धार्मिक स्थानों के पर्यटन महत्व आदिवासी कला, प्रदर्शन।

प्रस्तावना

पर्यटन का समाजशास्त्र नवोदित शाखा है। पिछले पचास–साठ वर्षों में पर्यटन के मायने बदल गए हैं। पर्यटन के समाजशास्त्र में सामाजिक पहलू से लेकर बौद्धिक विकास, मनोरंजन का सामाजिक उपयोग अवकाश क्षण की क्रियायें, यात्रायें, व्यापारिक–मनोरंजन, उद्यमों का प्रभाव सांस्कृतिक पूँजी के विकास और वित्तीय रूप में पर्यटन के आधार पर शोधों कार्यों का विस्तार हुआ है।

इस शोध प्रलेख में विश्लेषण के लिए निम्न उद्देश्यों को लिया गया है तथा इस क्षेत्र में प्रमुख शोधकार्यों का भी अध्ययन किया गया है।

1. पर्यटन के समाजशास्त्रीय पक्षों का अध्ययन करना।
2. जनजातीय, देशज समुदायों के संदर्भ में पर्यटन व्यवसाय, जनजातीय संस्कृति के ऊपर प्रभावों को देखना।
3. भारतीय जनजातियों के पर्यटन सामग्री (विपणन) मानने और सांस्कृतिक पर्यटन के आधुनिक पक्षों को जानना।
4. मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में 'पर्यटन' के लिए 'डेस्टीनेषन' एवं इकोटूरिज्म का महत्व जानना।

साहित्यावलोकन

पर्यटन का समाजशास्त्र नवोदित शाखा के रूप में विकसित करने में विदेशी अध्येताओं का योगदान रहा है। इरिक कोहन, बर्न्स वीह (2004) एवं हॉल्डोन (2005), इरिक (2012), जॉन डैरी (2009) जैसे पर्यटन के समाजशास्त्रीय पक्ष का उद्घाटन करने वाले प्रमुख नाम हैं। विक्रमेन्द्र कुमार (2018) ने "इमर्जिंग ट्रेन्डस् इन सोशियोलॉजी ऑफ टूरिज्म" में समीक्षात्मक दृष्टि ली गई है कि पर्यटन का अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यटन का क्षेत्रीय इतिहास पाया जाता है। युगों–युगों से पर्यटन होता रहा है। पर्यटन के व्यवसाय का बड़ा हिस्सा अर्न्तराष्ट्रीय व्यवसाय हवाई यात्राओं की प्रधानता और इसके यातायात में बढ़ोत्तरी से पूरी दुनिया 'ग्लोबल विलेज' हो चुकी है।

भूमण्डलीकरण और टूरिज्म की वृद्धि समकालीन महत्व का है। अवकाष क्षण क्रियायें, मनोरंजन आदि लेजर स्टडीज के साथ टूरिज्म संयुक्त रूप से शोध कार्यों का भाग है। टूरिज्म आज एक इंडस्ट्री है। शोधकर्ता आनंद और खुषी को पर्यटन व्यवसाय का वृद्धिकारक भाग कहते हैं। जनजातीय इलाकों में पर्यटन पर कई विद्वानों ने विधिवत अध्ययन किया है। कई विद्वानों ने पर्यटकों से स्थानीय जनजातीय संस्कृति और मौखिक संस्कृति पर प्रभावों का आकलन किया है। पर्यटन नीतियों को जनजातीय क्षेत्रों में विस्तार संदर्भ में भी अध्ययनों को संस्कृति के ऊपर प्रभाव की स्थिति का मूल्यांकन हुआ है।

Wang, N. (2000) ने टूरिज्म एण्ड मार्डनिटी “Tourism & Modernity : A SociologicalAnalysis” आवष्यक पुस्तक मानी जायेगी। इस पुस्तक में महानगरीय आधुनिकता से पर्यटन के क्षेत्र में नई दिशा तैयार हुई है।

बोधगया, बनारस, वृंदावन तथा धार्मिक पर्यटन हेतु विख्यात तीर्थ स्थानों के समाजशास्त्रीय शोधकार्यों के प्रकाषनों की परम्परा सृजन क्षेत्र में समृद्ध पायी गयी है। बसारत हुसैन (2012) ने डल झील पर्यटन (कश्मीर) पर पर्यटक उपस्थिति के प्रभाव पर शोध कार्य किया। सुधा रामचन्द्रन एवं रंजन कुमार ने अण्डमान द्वीप में पर्यटकों की रूचि और पर्यटन व्यवसाय के सम्बंध में शोध कार्य किया है। अमरकण्टक धार्मिक स्थान पर पर्यटन संभावनाओं में वृद्धि पर आलेख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं। पातालकोट, पातालपानी जैसे जनजातीय क्षेत्र के पर्यटन के महत्व पर शोध लेख पढ़े जा सकते हैं। अविनाश कुमार झा 2012 का मिथिला पेन्टिंग को पर्यटन एवं विपणन के सन्दर्भ में शोध परक लेख प्रकाषित हुआ है।

आज वैश्विक पर्यटन का दौर है। पर्यटन को समाजशास्त्रीय मानदण्डों पर देखने का निरंतर प्रयासरत हैं। इससे साहित्य समृद्ध हो रहा है। जनजातियों के सामाजिक जीवन में नये खतरों पर ध्यान गया है। एड्स, पर्यावरण प्रदूषण, वैवाहिक प्रदूषण, महिलाओं का शोषण और पलायन के खतरों पर लगातार लिखते रहते हैं।

वासवराज गुल–शेट्टी (2016) की पुस्तक “Sociology of Leissure & Tourism Studies” प्रमुख शोध कार्य सम्पादित कृति हैं। टूरिज्म सम्बंधी नये–नये शोध जर्नल प्रकाशित होते हैं, जैसे जर्नल आफ सस्टेनबुल टूरिज्म, जर्नल ऑफ टूरिज्म रिसर्च, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, टूरिज्म मैनेजमेंट आदि।

बटलर एवं हिन्स (Butler R. & Hinch T. Eds) की पुस्तक “TourismAnd Indigenous Peoples (1996) संदर्भित शोध साहित्य में गिना जाता है। जनजातीय समाज, संस्कृति को पर्यटन व्यवसाय के संदर्भ में शोध कार्यों का क्रम आगे बढ़ा है। Dann G. & Cohen E. का शोधपत्र SociologyAnd Tourism एनल्स ऑफ टूरिज्म पत्रिका में प्रकाशित हुआ। जिसमें नये शोधकर्ता के लिये मार्गदर्शक सामग्री मिलती है। इसी तरह टूरिज्म के समाजशास्त्र पर शोधकार्यों का पश्चिमी जगत में भरपूर स्वागत हुआ है।Indrew Holden (2005) की पुस्तक Tourism StudiesAnd the Social Sciences आधारभूत विमर्श प्रस्तुत करती है। इसी तरह Erik Cohen (2012) की पुस्तक और शोध पत्रों का भी महत्व है जैसे Current Sociological TheoriesAnd Issues in Tourism प्रारंभिक शोध प्रेरक प्रलेख माना जा सकता है। स्टेफेनिया क्रासडिनेल (2015) की प्रलेख कृति The relationship between Tourism SociologyAnd Social Control (म्यूनिख : वरलाग–2014) अग्रणी शोधकार्य प्रलेख है जो नवोदित शोधकर्ताओं हेतु अनिवार्य स्त्रोत माना जा सकता है। समाजशास्त्री जॉन उरी का The Tourist Gaze (1990) समादृत ग्रंथ है। ए.जगन्नाथ एवं एम.मोहनराज (2014) ने पर्यटन के सामाजिक प्रभावों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से विष्लेषण किया है।

विश्लेषण

पर्यटन का समाजशास्त्र देशज समुदायों और धार्मिक समूहों से बाहरी व्यक्तियों का सामना होने के परस्पर क्रियावाद का क्षेत्र अच्छा साबित हो सकता है। यद्यपि देशज स्थानीय समुदायों की प्रतिक्रियायें और स्वागतेय विचारों से तत्काल अवगत होने की समस्या है, परन्तु पर्यटक एक अच्छी समाजशास्त्रीय अर्न्तदृष्टि सम्पन्न होने से समस्या से निकट से जान सकेगा। शहरी सभ्यता के विकास का बड़ा खण्ड पर्यटन है जो मनोरंजन क्रियाओं के प्रति बढ़ती रूचि के कारण है। इन जनजातियों के घने आवासीय क्षेत्र जैसे मध्यप्रदेश और झारखण्ड के गोड़ बहुल (अमरकंटक जैसे) क्षेत्र अथवा भारतीय जनजातियों के इसाई धर्म बहुल क्षेत्र मैकलुस्कीगंज (झारखण्ड) हो, पर्यटन के नजरियों से कम ध्यान दिया गया। पर्यटक स्थल के रूप में विकास की उपेक्षा हुयी। सरकार एवं नागरिक संस्थाओं को पर्यटक स्थलों की संस्कृति को विरासत के साथ विकसित करने की जिम्मेदारी स्वीकारनी चाहिये। जनजातियों की बाहरी संस्कृति वैचारिक ज्ञान का लिखित एवं प्रदर्शनात्मक ज्ञान पर्यटकों से आज मिलता है, आदिम जाति से लेकर शिक्षित समुदाय गोंड़, कवर, बैगा, कोल जो राजनैतिक चेतना सम्पन्न भी हो रहे हैं। इन समुदायों का जीवन इन सामाजिक प्रश्नों से जुड़ा हुआ है, जैसे मनोरंजन क्षण क्रियायें (स्वयं, रचित, मौखिक, सांस्कृतिक प्रधान) भ्रमण, मड़ई (स्थानीय मेला) अवकाश उपयोग क्रियायें स्वागत और आथित्य, लोक संस्कृति की राजधानियों में प्रयोग और ग्रामीण शिल्प, धरोहर, बाजार–हाटों में प्रदर्शन, धार्मिक पर्यटन जैसे अमरकंटक, नर्मदा दर्शन, मण्डला जिले तक के दायरे में आदिवासी ग्रामीण पर्यटन का सालाना कार्यक्रम आदि।

समाजशास्त्री पर्यटन को एक परिघटना मान रहे है जो 20 वीं सदी के आदिवासी संस्कृति के विलुप्त होते जाने और शहरी मिश्रित संस्कृति के दोहरे प्रभाव को विषय वस्तु मानकर मड़ई मेले पर केन्द्रित रहे हैं। व्यवसायिकता, मुद्रावाद और शहरी सभ्यता के लिए उपयोगी भौतिक संस्कृति उपादान भी है। इस विचार–परिधि में पर्यटक का दृष्टिकोण और व्यवहार इंटरटेनमेंट इन्डस्ट्री का पक्ष मजबूत है। जनजातीय क्षेत्र में धार्मिक स्थलों में विभाजन सामान्य हिन्दु धार्मिक स्थल से अलग आदिवासी प्रमुख स्थले हैं। यहाँ की पवित्रता, प्राचीनता, गंतव्य स्थल की छवि के साथ यात्रा–संस्कृति का प्रभाव सम्मिलित है। जनजातीय क्षेत्रों में 'पवित्रता' का विचार

प्रमुख है। इसको नष्ट करने का भय आदिवासी समाज में बाहरी पर्यटकों से चिन्हित किया जाता है।

सामाजिक परिवर्तन में पर्यटन (स्थान, दूरी, प्राचीनता, पवित्रता) को मिलाते हुए पर्यटन का समाजशास्त्र प्राचीन, पारम्परिक समाज के वर्तमान और अतीत की निरंतरता का भी ज्ञान है। जनजातियों ने बाहरी व्यक्तियों के बीच पर्यटक की पहचान पर सवाल उठते हैं जैसे जनजातियों को असन्तोष के मुहाने पर पर्यटक जैसे कोई हो सकता है। पर्यटक की सामाजिक पहचान है जो बौद्धिक प्राणी के बजाय प्राकृतिक एवं मानवीय सौंदर्य का दर्षन करने आता है। आदिवासी इलाकों में फैले विभिन्न राज्य विरोधी गतिविधियों नक्सलवाद और अन्य किंचित मात्रा में उमड़ते पर्यटकों के बीच से भी संभव है। संगठित हिंसा से पीड़ित परिवारों की दृष्टि से भी यह सत्य है। जनजातियों के क्षेत्र में पर्यटन की संभावनायें अपार हैं। प्रारंभिक प्रश्नों पर ध्यान देना होगा क्योंकि पर्यटन का अच्छा और बुरा दोनों पक्ष प्रारंभ से ही समझना जरूरी है।

पर्यटन विकास में ऐसी सावधानियॉ जनजातीय क्षेत्र में जरूरी है। जनजातियों के बीच से पर्यटक गाइड, भोजनालय, पेयजल संचालन, दुकानें और कई सहायक सेवायें उपलब्ध हैं। किसी भी जनजातीय क्षेत्र में राज्य के नियंत्रक एजेन्सियों ने पर्यटकों को भरपूर सुविधा देने के लिए सुविधा केन्द्र (स्वच्छता हेतु शौचालय, सस्ते पर्यटक होटल, राज्य टूरिज्म होटल जैसे) व्यवस्थित तंत्र तैयार है।

जनजातीय क्षेत्र में 'पर्यटन' मात्र एक व्यावसायिक उद्यम नहीं है अपितु सामाजिक स्थानीयता और परिवेश के आधार पर लोकप्रिय है। जनजातीय क्षेत्र मं सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन की मुख्य 'पहुॅच' है जो पर्यटकों के समक्ष आसानी से उपलब्ध है, क्योंकि पर्यटन में बाहरी तत्व प्रभावित करता है। पर्यटन से लोगों, स्थानों, समुदायों व उनकी रोजमर्रा की जीवन–शैली पर पर्यटक गतिविधि के प्रभाव पड़ते हैं। पर्यटक प्रसिद्धि का विषय है विशेषकर भारतीय परिवेश में पर्यटन की सामाजिक स्वीकृति स्थानीय सहमति से आती है जनजातियों की संस्कृति यह बाहरी प्रभाव क्या हो सकता है। जनजातियों के आत्मसात्मीकरण और अनुवर्तन की प्रक्रिया तेज रही है। भ्रमण के साथ सम्पर्क से नये–नये पर्यटन धार्मिक स्थल में विकसित हुए हैं। यह धर्म और स्मारक स्थलों से जुड़ा है। सांस्कृतिक रूपांतरण जनजातीय क्षेत्रों के सन्दर्भ में पर्यटक के व्यवहार की परम्पराओं पर प्रभाव आज प्रत्यक्ष माना जा सकता है। पर्यटक मनभावन हो सकता है अथवा जनजातियों के क्षेत्र में खलनायक की छवि अवांछित पर्यटकों की है। दोनों छवियों पर विचार करना चाहिये क्योंकर जनजातीयों ने इसे स्वीकार किया या खराब माना। सांस्कृतिक एवं धर्म के पहलू पर्यटन के समाजशास्त्र में एक सामाजिक परिघटना के साथ मिलते हैं। पर्यटन हेतु जनजातीय जीवन में प्रवेश स्थल चयन व्यक्तिगत एवं बौद्धिक अभिप्राय से युक्त है। जनजातियों के जीवन के क्या तत्व हैं जो पर्यटक को आकर्शित करते हैं अथवा विकर्षण के क्या कारक हैं ? जनजातियों में व्याप्त जीवन–शैली की महानता और उनकी ऐतिहासिकता के आकर्षण पहलू (Push Factors) है और जनजातियों में बाहरी लोगों से दूरी, एकांकीपन असंतोष के वैचारिक कारण विकर्षण पहलू (Pull Factors) है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहलू ऐसे है जो आकर्षण, विकर्षण, तटस्थ प्रस्थिति के नजरिये के रूप में सामने आते हैं। जनजातीय क्षेत्र में पर्यटक बाहरी हस्तक्षेप है परन्तु पर्यटकों से मिलने वाले आर्थिक लाभों को नजर अंदाज नहीं करता। प्रश्न है कि जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन की व्याप्त धारणायें और प्रसिद्धि कभी नकली पर्यटन क्षेत्र को आगे बढ़ने की गुंजाईश पैदा करती है ? जनजातीय क्षेत्रों का पर्यटन दूसरे महान पर्यटन क्षेत्रों से अधिक वास्तविक और अनोखा है।

प्रथमतः विचार करना होगा कि आदिवासी संस्कृति और पर्यटक–भ्रमण से पारस्परिक शक्तियॉ संरक्षणवादी अथवा उपनिवेशिक दृष्टि (Colonial Point of Views) का विकास तो नहीं कर रही है ? इतिहास में आदिवासियों की स्थिति को सहेजने की आवश्यकता है। यह कार्य ऊपर के दोनों तरीकों से नहीं हो पायेगा। आदिवासी प्रायः गरीब इलाकों में रहते हैं। उन्हें अपनी गरीबी के प्रति जो सोच है, भ्रमण करने वाला पर्यटक नहीं पहुॅच सकता। ऐसा मान सकते हैं कि पर्यटकों की बड़ी भीड़ और उनकी उत्सुकता से समस्या बढ़ सकती है। जरूरत है कि बिना असंतोष और टकराव पैदा किये वे इस दिशा में किस सीमा तक जाने में सुविधा प्राप्त करेंगे।

पर्यटन एक सोचा–समझा भ्रमण कार्यक्रम है। मध्यप्रदेश में पर्यटन स्थलों को मानचित्र में आदिवासी इलाके के भीतर अधिक हैं। सांस्कृतिक पर्यटन के नजरिये से मण्डला से लेकर फैले 16 जनजातीय जनसंख्या बहुल क्षेत्रों में वैविध्य है। ऐतिहासिकता का आधार या प्राचीनता का समय काल एवं स्थानगत विविधतायें हैं, इसमें वर्तमान काल से दो धारायें प्रवाहित होती है सांस्कृतिक मिलावट और संक्रमण तथा शहरी सभ्यता का आघात। आदिवासी समाज पर्यटकों की नजर में प्राप्तकर्ता के मुहाने पर है, 'दाता' की नियति कमजोर। भारत में मण्डला का जीवाश्म पार्क और खजुराहो देशज पर्यटन और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के दो छोर हैं, परस्पर जनजातीय क्षेत्रों में टूरिस्ट मैप और योजना के अनुसार है मध्यप्रदेश में पर्यटन खजुराहो वरीयता पर रखें और उसके बाद जनजातीय मण्डला पहुॅचे ऐसा सामान्य टूरिस्ट का टूर–पैकेज है।

दूसरा पक्ष यह है कि जनजातीय क्षेत्र के छोटे–छोटे गॉव आज जिले के पर्यटन मानचित्र में स्थानीय जन–संस्कृति के रूप में चिन्हित हुये हैं। अतः जनजातीय क्षेत्र में परिवर्तन के लिए पर्यटन की जिम्मेदारी की जरूरत है। जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन के संसाधनों के विकास के दौर में देशज कला, आदिवासी पेंटिग, मूर्त कलायें आदि पर्यटक के लिए प्रदर्शित की जाती हैं। इसमें वस्त्र, हस्तशिल्प आदि सैकड़ों प्रदर्शक माडल हैं, परन्तु आज भी इनके प्रदर्शन के साथ विपणन के साधन और अवसर कम हैं। राजधानियों में आदिवासी शिल्पकला प्रदर्शनी आयोजन गिनती के दिनों का होता है जैसे भोपाल का ग्रामीण शिल्प हाट चिन्हित स्थल है। विपणन का महत्व शिल्पहाट से समझा जा सकता है। जनजातीय क्षेत्र का पर्यटन विकास शहरी दर्शक, पर्यटक के साथ 'प्रदर्षक' अवधि को आयोजन पर केन्द्रित है।

यदि मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्र जैसे मण्डला, डिडौरी और अमरकंटक नर्वदा उद्‌गम क्षेत्र का पर्यटन महत्व ही लें तो अमृतलाल बेगड़ जी का स्मरण होता है, जिन्होंने लम्बे समय तक नर्वदा के तीरे–तीरे सघन पर्यटन यात्रा की और अपने पर्यटन अनुभव में नर्वदा की कण–कण भूमि, गॉव, आदिवासी जनों को इतिहास के रूप में लिपिबद्ध किया। यह किसी भी सांस्कृतिक पर्यटन का समृद्ध साहित्य है। बौद्धिक लोगों की घुमक्कड़ जिज्ञासा सदैव सांस्कृतिक पर्यटन का मुख्य प्रेरक होता है। नृतत्व शास्त्री क्षेत्र कार्यों के लिए लम्बी दूरी तक गये हैं और जाते रहते हैं जैसे पातालकोट के भारिया जनजाति रहवास क्षेत्र का अपना आकर्षण है उसी तरह वेरियर एल्विन (V.Elvin) का बस्तर स्वतंत्रता पूर्व का सबसे सशक्त एथनोग्राफिक पर्यटन इतिहास है। वेरियर एल्विन द्वारा रचा गया लेखन और साहित्य है जो पर्यटन इतिहास के मानवशास्त्रीय खण्ड में समृद्ध योगदान है।

जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन को इकोटूरिज्म से संयुक्त करना चाहिये। कई आतिथ्य और सेवायें जनजातीय क्षेत्रों में विकसित हो रही हैं –

1. जनजातीय खाद्‌य पदार्थों की व्यंजनों की सूची
2. रेसोर्ट, होटल व्यवसाय,
3. म्यूजियम–वार्ताकार, अनुवादक,
4. गहन जनजातीय क्षेत्रों के प्रपात, पहाड़ियॉ और घने जंगलों में भ्रमण।

i. प्रकृति दर्शन,
ii. सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य के लिये प्रख्यात दार्शनिक स्थान,
iii. प्रख्यात पशु–पक्षी के रहवास,
iv. मछलियॉ, शिकार के अन्य आकर्षण।

जनजातीय क्षेत्र में संस्कृति, अर्थप्रणाली भी बदल रही है। अतः जनजातियों के बदलते जीवनशैली को सांस्कृतिक टूरिज्म के दायरे में रखा जाना चाहिये, परन्तु अभी तक यह सुप्तावस्था से बाहर आ पाया है, आधुनिक टूरिज्म मुख्यतया धनिकों के और वैभव विलास की दुनिया वालों को राहत, मनोरंजन प्रदान करने वाला बना हुआ है। संस्कृति के प्रदर्शन योग्य और विपणन के लिये उपयुक्त बाजार बनाने का समय है। आज अभी अधिक राजस्व ट्राइबल आर्ट म्यूजियम, एन्टिक संग्रह की दुकानों से मिलता है। सांस्कृतिक नजरिये से जनजातीय शिल्प राष्ट्रीय स्तर पर बिक्री और प्रदर्शन में रेकार्ड स्थापित किया है।

गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश राज्य के घने जंगलो में आदिवासी आज भी बसे हुये है जहॉ सास्कृंतिक पर्यटन–परिस्थितियों (Ecosystem) के प्रश्नों से मुठभेड़ देखी जा सकती है अर्थात अभ्यारण्यों (सिहं अभ्यारण्य विषेषकर) के लिये आदिवासी इन जंगलो से बाहर बसाहट में भेजे जाने की नीति लागू है। कान्हा किसली फारेस्ट पार्क (मण्डला) के क्षेत्रीय आदिवासी परिवारो का बाहरी विस्थापन पर्यटन हेतु अभ्यारण्य के व्यावसायिक दोहन के कारण आदिवासियो को जल, जंगल, जमीन, से बाहर किया जाना जारी है। (क्रिस लैंग–2015)

बैगा जनजातियों के परिवार कान्हा अभ्यारण्य से बाहर बसाये जाये। कान्हा अभ्यारण्य प्रकृति–बाघ–आदिवासी समाज के बीच समरसता और असंतोष के दायरे में अस्तित्व का विचारणीय मुद्‌दा है। पर्यावरणवादी भी एक प्रकार से इको–टूरिस्ट है जो जंगल बुक (The Jungle Book : Rudyard Kipling) के परिचित कथाओ से प्रेरित होकर भी आते है। आदिवासी (बैगा, गोड़) जंगल विभाग को उजाड़ने की नीतियो के शिकार हैं ताकि रिजर्व क्षेत्र बढ़ाया जा सके, अवैध शिकार पर रोक लगे। रिर्पोट्स कहती है कि 450 परिवारो को जंगल (अभ्यारण्य) से बाहर खदेड़ा गया (जून–2014) यद्यपि सरकार और प्रशासन पुर्नवास नीति, मुआवजे के आकड़ों से अपना पक्ष रखती हैं आदिवासी क्षेत्रों में पयर्टन का प्रश्न विस्थापन, पुर्नवास और जल, जमीन, जंगल से जुड़े मुददे बने भी है।

जनजातीय क्षेत्रो में पर्यटन स्थलो का विकास नियोजित विकास के माडॅल अपना कर किया जाना चाहिये पर्यटकों के रूची में प्राचीनता, अनूठा आदिवासी परिवेश, संगीत धर्मी उपस्थिति केन्द्र में रहें। प्राथमिक रूप से शिल्प, कलाये, रीति–रिवाज, दस्तकारी, कौशल को विपणन के साथ प्रयोजनीयता प्रदर्शित करनी होगी।
नये समाजशास्त्रीय अध्ययनो में दस्तकारी कलाये, धार्मिक मूर्तियां, मुखौटे दिखावटी सजावटी वस्तुओं का जीवन और मनोरंजन में कैसे प्रयोग होता है प्रमुख विश्लेषण का विषय हैं। सांस्कृतिक पर्यटन नये–नये पयर्टन को जनजातीय क्षेत्रों में आने और रूकने का वेहतर अवसर प्रदान करता है, एवं बाहरी पर्यटकों को नये क्षेत्रो देखने की प्रवृत्ति है। इन क्षेत्रों में उॅचे दामो पर पर्यटक की जरूरत के सामानों की बिक्री, भाषा का अंतर और कालाबाजारी, बाल अपहरण की घटनायें, स्त्रियों की तस्करी भी चिंता का विषय हो सकती है। अध्ययनकर्ताओं ने पाया है कि थाइलैण्ड जैसे देश में एड्स वेश्यावृत्ति, गोल्फ और आदिवासी पयर्टकों की रूचि के क्षेत्र वन गये है, जापान के लोग पर्यटकों को अपना मेजवान घरेलु स्तर पर लेते हैं जो मेजवान परिवार घर जैसा माहौल विदेशी पर्यटक को देता है। भारत में घरेलू पयर्टन की संख्या में वृद्धि हुई है। आदिवासी क्षेत्रों में पयर्टन का समाजशास्त्र अनुकूलन और परिवर्तन के विभिन्न प्रभावो का भी अध्ययन है। आदिवासी शारीरिक अनूठी विषेषतायें कैसे प्रकट करता है? यह किसी पयर्टक की इस क्षेत्र और निवासियो के बारे में पहली जिज्ञासा है। एक प्रमुख तथ्य यह कि इनमें जो समाजशास्त्रीय अर्न्तदृष्टि बन सकती है, वह पूर्व के अवलोकन से मिलती–जुलती हैं। विपणन की अवधारणा और संभावनाये पयर्टन को आगे ले जा सकती हैं। आदिवासी समाज की जरूरतों और पयर्टन के बीच सम्बंध मजबूत है बिना विपणन कला के पयर्टन स्थल पर आकर्षण जैसे होटल व्यवसाय, खान–पान व्यवस्था की स्थिति को देखते है। अतः पर्यटन व्यवसाय और मजबूत करने की जरूरत है। जैसे वस्तर के मिटट्‌ी की मूर्तियाँ और लकड़ी के मुखौटे पयर्टक पहले खरीदने को उत्सुक रहते है।

जैसा कि लम्बे समय से पर्यटन के इतिहास में मिलता है पर्यटन किसी स्थल को रूपांतरण कर देता है। आदिवासी स्थलों में सम्पर्क और प्राचीनता के दोनों छोर

पर गाइड, दुकानदार, टैक्सी ड्राईवर, दलाल, म्यूजियम प्रदर्शक आज मौजूद है। इनसे तीर्थ स्थल जैसे अमरकंटक तीर्थस्थल की व्यक्त छवि के कई रूपांतर मिलेंगे परन्तु सहकार के स्थान पर स्थानीय आदिवासियों से पर्यटकों के बीच दूरी बनाने का उद्यम करते हैं। कोशिश यह की जानी चाहिये कि पर्यटक अपने रूकने के उपरान्त अच्छी छवि लेकर जाये कि वह स्थान उसे दोबारा आने के लिये प्रेरित और पर्यटन में दिलचस्पी पैदा करे।

जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन की संभावनायें वृहद् हैं। हाल के वर्षों में धार्मिक पर्यटन, इकोटूरिज्म, जनजातीय क्षेत्रों में शैक्षिक चिकित्सा पर्यटन का क्षेत्र आगे बढ़ा है। भारत में ऐसे जनजातीय क्षेत्र हैं जहॉ मनोरंजन और शहरों (प्राचीन) से अधिक इकोटूरिज्म को महत्व मिलने लगा है। विदेशी और घरेलू पर्यटकों ने भारत के सभी राज्यों में विशेषकर मध्यप्रदेश पर अधिक ध्यान दिया है। संचार साधनों से पर्यटन योजना कम समय में तैयार करके घूमने जाने का प्रचलन आज चलन में है। फुर्सत का क्षण, अवकाश और मनोरंजन की आवश्यकता ने शहरी जीवन से ऊबे हुए व्यक्तियों को गंतव्य स्थान पर पर्यटन करने की अभिरूचि पैदा की है। मध्यप्रदेश राज्य को ही लें टाइगर प्रोजेक्ट प्रमुख है और पर्यटन विभाग उन सात पर्यटन स्थानों को भी महत्वपूर्ण साधन देता है जैसे पचमढ़ी, माण्डू, बांधवगढ़ नेशनल पार्क, कान्हा नेशनल पार्क, खजुराहो, भीम वेटिका आदि क्षेत्रों में पर्यटक आदिवासी क्षेत्रीय जीवन से रूबरू होता है। सरकारी नजरिये से पर्यटन एक उद्योग है जिसमें रोजगार की बड़ी संभावनायें हैं। आजकल मध्यप्रदेश में नये पर्यटक स्थल बांध और कृत्रिम सागर और झीलें भी हैं। नर्वदा सागर के आसपास बसे आदिवासी अभी भी गरीब हैं। पर्यटन को लाभकारी धंधा बनाने में आदिवासियों का कितना भला होगा, यह विचार करना होगा। पर्यटन की बाधायें आदिवासियों के पलायन की घटनायें हैं जो परियोजना और बड़े उद्योग क्षेत्रों में भी जारी है पर्यटन के विकास हेतु प्राकृतिक स्थानों को सुविधापूर्ण बनाया जाना चाहिये और संसाधनों का दोहन से पहले प्रकृति का आकर्षण जनजातियों के मूल जीवन शैली और उनकी स्थानीयता की पहचान सुनिश्चित रूप से यथावत रहे।

झारखण्ड राज्य मध्यप्रदेश की तरह आदिवासी बहुल राज्य है। यहॉ आदिवासी जिलों में हेरीटेज पर्यटन (Heritage Tourism) लोकप्रिय है। असुर, विरहोर, मुण्डा, संथाल, चेरो, बैगा, विरजिया, जैसी कई जनजातियॉ रहती हैं, परन्तु इनके पर्यटक की नजर और छवियॉ हैं संगीत, नृत्य और रंग–बिरंगे पोशाक वालों की हैं। बॉस हस्तशिल्प, बुने कपड़े भी। इससे रॉची राजधानी में हस्तशिल्प मेला सजा रहता है, जबकि व्यापक हिन्दु धार्मिक स्थलों में देवधर का ऊँचा स्थान है। एक महानगर के आसपास धार्मिक महत्व के स्थलों का पर्यटन रूट प्रसिद्ध हो जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य में आदिवासी परिपथ विकास (गंगरैल) कर रहा है स्वदेश दर्शन योजना है (फरवरी–2016 से) ऐसी योजनायें नागालैण्ड, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ के साथ आयी है। 38,175 करोड़ की लागत परियोजना (स्वदेश दर्शन योजना) में बजट तैयार किया गया है। मध्यप्रदेश में ही छिंदवाड़ा जिले में 1700 फीट नीचे बसे पातालकोट के आदिवासी समाज की अलग दुनिया है। यहॉ आदिवासियों के 12 गॉवों का समूह बसा हुआ है। भारिया प्रमुख जनजाति है। इस क्षेत्र में पर्यटन की उत्सवकारी शुरूआत की गयी।

निष्कर्ष

भारत के एक दूसरे छोटे क्षेत्र अण्डमान, निकोबार का नाम जारवा जैसी लुप्तप्राय आदिवासियों से पर्यटकों का प्रवेश स्थानीय संस्कृति के साथ समस्यापूर्ण सूचित हुआ है। यहॉ आदिवासी नृत्य हेतु जाने जाते हैं। विदेशी मीडिया ने भी रिपोर्ट किया है। पर्यटन गतिविधियों के लिये इन आदिवासियों (जारवा) के नृत्य और शरीर के प्रदर्शन का मुद्दा उठा था (25 जनवरी, 2012 जागरण जंक्शन इंटरनेट) जारवा जैसी आदिवासी समाज के आदिवासीपन की दुर्लभता का उदाहरण है। यह समाज सभ्य पर्यटन से बाहर पड़ता है। अतः पर्यटन के विभिन्न समर्थनकारी और आदिवासी समाज के हितों को जोड़ते हुए लेना आवश्यक है, जो पर्यटन नीति का अनिवार्य उद्देश्य होना चाहिये।

Footnotes

1. *“Indigenous tourismAsA form of tourism in which Indigenous peopleAre directly involoved either through controlAnd/or by having their culture serveAs the essence of theAttraction”.*
2. *“Cultural Tourism has been definedAs the movement of persons to culturalAttractionsAway from their normal place of residence with the intention together new informationAnd experiences to satisfy their cultural needs.” ……….Milena Ivaonic, Cultural Tourism : Juta & Co.2009.*
3. *"Indigenous Tourism can be definedAsAActivity in wchich indigenous peopleAre directly involved either through controlAnd/or by having their culture serveAs the essence of theAttraction."……… www.unbc.com.*
4. *Aboriginal (Culture tourism describesAll tourism business thatAre owned or operated by first nations people metisAnd inuit people that incorporatesAnAboriginal cultural experiences inA mahnevs that isAppropriate respectfulAnd true to theAboriginal cultures being presented. …….ATC-2000*

References

1. *Andrew Holden (2005), Tourism StudiesAnd the Social Sciences, London : Routledge.*
2. *A. Jagnathan, M.Mohanraj (2016),A Study of Cultural effects on Tourism in India, IRJET, Vol.3(11).*
3. *Abinash Kumar Jha et.al.(2017), Indigenous Tourism in India, Evoluating the Strength of Mithila PaintingArtsAnd heritageAnd Suggesting Intregrated marketing developmentApproach for sustainable promotion,Atna Journal of Tourism Studies. Vol.12 (2) 1-34.*
4. *Burns G.Leah (2004),Authropology And Tourism Past ContributionsAnd Future : Theoritical Challenges,Authropoligical Forum.*
5. *Basarat Hussain, Anthrology of Tourism: Political Economy of the Dal Lake Region.*

6. *Chris Lang ; www.scandal : Evictions of indigenous people in India for Tiger Tourism 2015, 23 July-http//redd-monitor.org/2015/07/23 www.part.c*
7. *Erik Cohen (2012), Current Sociological TheoriesAnd issues in Tourism,Annals of Tourism Research 39 (4) 2177-2202.Cohen, S.A. & Cohen E.(2017), New Directions in the sociology of tourism. Current Issues in Tourism.*
8. *Enriqne Macstas (2011), NativeAnthropologyAndAuthropology of Tourism, TheAppliedAnthroplogist 31 (1).*
9. *Greg Richards, Cultural Tourism.*
10. *JobaireAlam (2014), The relationship between Tourism SociologyAnd Social Control Munich, GRAIN Verlag.*
11. *KnutAuk Land (2016), Krishna Curse in theAge of Global Tourism: Hindu Piligremage priestAnd their Trade, ModernAsian Studies, Nov., 1932-1965.*
12. *National Tourism Policy-2002, New Delhi, Ministry of Tourism-GOI.*
13. *NakajoAkihito (2017), Development of TourismAnd the Tourist Industry in India :A Case Study of Uttarakhand, Journal of UrbanAnd |Regional Studies on Contemporary India, 3(2), 1-12*
14. *RafiqAhmed, Habitus, CapitalAnd Pattern of Taste in Tourism Consumption: A Study of Western Tourism Consumers in India , Sage Journal of HospitalityAnd Tourism.*
15. *रंजन कुमार (2012), जारवा आदिवासी : संरक्षण या पर्यटकों का मनोरंजन जागरण जंक्शन, 25 जनवरी*
16. *Rajdeep (2012), Reasons why India isA great destination for cultural Tourism.*
17. *Ryan C. (1997), TourismAnd Indigenous people Tourism Management. http.doi.org/ 10.1016/so261-5177(97) 84400-7.*
18. *R.Butler & T.Hinch (Eds) TourismAnd Indigenous people. New York: Routledge.*
19. *Stefania Casdinale (2015), Intangible Cultural Heritage Revitalization for developmentAnd Tourism: The Case of Purulia Chhau Danee, Material Culture Review, Vol.83 (2015).*
20. *Siegrid Deutsch LanderLeslie J.Miller (2008), PoliticizingAboriginal Cultural Tourism, The discourse of Primitism, Canadian Review of Sociology, July.*
21. *Searehy Sarah, Tourism, PiligrimageAnd development in Bodhgaya, Bihar, India, www.icu.edu*
22. *Sudha Ramchandran (2017),Andman & Nicobar : Vital Islands Vanishing Tribes, The diplomat, Dec.1*
23. *Urry, J.(1990), The Tourist Gaze : London Sage.*
24. *Ueli Gyr, The History of Tourism Structures on the path to modernity European History Online.*
25. *Vikramendra Kumar (2018), Emerging trends in sociology of tourism. Sociology International Journal, 2(3)*
26. *Wang, N. (2000), TourismAnd Modernity: A SociologicalAnalysis, Kingston Oxgn.*
27. *दैनिक भास्कर (2016), एक खूबसूरत पवित्र नगर–अमरकंटक, सितंबर–4*
28. *अमरकंटक : विकीपीडिया*
29. *Anupur Tourism, Web Paper Tourism/Amarkantak.*
30. *अमरकंटक : परिदर्शन www.amarkantak_paridarshan.com*
31. *मनीष वैद्य, हनुमंतिया के बाद अवधाराजी और कावड़िया जल पर्यटन के नक्शे पर, www.hindiwaterportal.org*
32. *झारखण्ड का पर्यटन, विकीपीडिया*
33. *पहला आदिवासी परिपक्ष : हेमंत खरे–9977119..... फेसबुक*
34. *मनोज कुमार सिंह – यहॉ बसी है एक अलग दुनिया दोपहर तक पहुॅचती है सूर्य की रोशनी– पातालकोट, पत्रिका.कॉम*
35. *Stop Illegal Eviction of Tribes from Kanha Tiger Resesve.Activity, Down to Earth, 4 July 2015.*